

مارچ ۱۳۸۶ھ

ماہنامہ شمعاعِ کلمہ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى
قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
يَهْدِي اللَّهُ لَكُمْ طَرَفَ سَبْعِينَ أَلْفَ سَنَةٍ



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लाखनऊ



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone . 2252230

वर्ष-2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 9

माह मार्च - 2006 लखनऊ
नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
“लखनऊ”

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक

हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड

प्रोफेसर सै. हुसैन कमालुद्दीन अकबर, मु0 र0 आबिद,
सैय्यद समीउल हसन वसीम, शबीब अकबर नक़वी

वार्षिक - 200 रु

मिलने का पता

कीमत - 20 रु

नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत फ़ोन न0 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निजामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस
नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जायसी'।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	वफ़ाते सरवरे दो आलम (स०)		
	सैय्यद मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला		3
2-	हज़रत इमाम हसन मुजतबा (अ०)		
	सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई		4
3-	हज़रत इमाम ज़ैनुलआबिदीन		
	सैय्यद मुहम्मद हुसैन तबातबाई		6
4-	हयाते इमाम मूसा काज़िम (अ०)		
	हज़रत शहीद सफीपुरी		7
5-	घर और समाज में खुदा का डर		
	हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान		12
11-	मुख्य समाचार		
	इदारा		15

हज़रत अली (अ०) ने फरमाया :-

हर हाल में नेक कामों की हिदायत करने वाले और बुरे व नापसन्दीदा कामों से रोकने वाले बनो। हर अच्छे काम को अन्जाम दो और हर बुराई से परहेज़ करो।

वफाते सरवरे दो आलम (स०)

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला
अनुवादक : सै० सुफयान अहमद

10 हि० में हुज्जतुलविदाअ के मौके पर इस्लाम के अहकाम की तालीम के साथ हुजूर ने यह भी फरमाया कि मुझे आइन्दा साल तुम लोगो से मिलने की उम्मीद नहीं है। और कुछ रिवायतों में यह अलफाज़ हैं। आँ-हज़रत (स०) ने फरमाया: "शायद मैं इसके बाद हज न कर सकूँ।" इस वक़्त आपने तमाम मुसलमानों को अपने दीदार की इज़्ज़त बख़्शी और सबको हसरत के साथ रवाना किया। आपने शोहदा-ए-ओहद रज़ि० की क़ब्रों पर जाकर उनको आठ साल के बाद इस तरह रुख़सत किया जैसे कोई मरने वाला ज़िन्दा अज़ीज़ों को रुख़सत करता है फिर मुसलमानों की एक बड़ी तादाद में एक खुतबा इरशाद फरमाया और कहा: "मुझे डर नहीं है कि तुम लोग मेरे बाद शिर्क करोगे लेकिन इससे डरता हूँ कि कहीं दुनिया में न फंस जाओ और दुनिया के हासिल करने के लिए कहीं आपस में फसाद और खूनख़राबा न करो क्योंकि अगर तुम ऐसा करोगे तो उसी तरह हलाक और बर्बाद हो जाओगे जिस तरह तुमसे पहली कौमें हलाक हुई। वक़्त गुज़र गया और आख़िर 18 या 19 तारीख़ सफर का महीना 11 हिजरी को आधी रात के वक़्त आप जन्नतुलबकी के क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ ले गए और जब वहाँ से वापस हुए तो तबियत ख़राब हो गई। फिर मरज़ में शिद्दत होने लगी। एक रोज़ कुछ सुकून था ज़ोहर की नमाज़ के बाद खुत्बा दिया। यह आपकी हयात का आख़री खुत्बा था आपने इरशाद किया खुदा ने अपने एक बन्दे को इख़्तियार दिया

है कि चाहे वह दुनिया की नेमतों को कुबूल कर ले या जो कुछ आख़िरत में है उसे कुबूल कर ले मगर उस बन्दे ने खुदा ही के पास की चीज़ें कुबूल कर लीं हैं। आपको अपनी बेटी फातिमा ज़हरा (स०) से बेहद मुहब्बत थी बीमारी के ज़माने में किसी वक़्त उन्हें बुलाया, जब हाज़िर हुई तो उनके कान में कुछ कहा तो वह रोने लगीं, फिर कुछ फरमाया तो वह हंसने लगीं। जब किसी ने पूछा तो रसूल (स०) की बेटी ने फरमाया: पहली बार मेरे बाबा ने फरमाया कि मैं इसी मरज़ में इन्तेक़ाल करूँगा तो मैं रोने लगी फिर फरमाया कि मेरे बाद मेरे ख़ानदान में सबसे पहले तुम मुझ से आकर मिलोगी तो मैं खुश होकर हंसने लगी।

वफात के रोज़ जिस क़दर दिन चढ़ता जाता था आप पर बेहोशी ज़्यादा हो रही थी और फिर किसी वक़्त हालत बेहतर भी हो जाती थी। हज़रत फातिमा ज़हरा (स०) से फरमाया हसन (अ०) और हुसैन (अ०) को मेरे पास लाओ। बच्चे लाए गए, हज़रत इमाम हसन (अ०) ने अपना मुँह नाना के मुँह पर रख दिया और हज़रत इमाम हुसैन (अ०) ने अपना सर रसलुल्लाह (स०) के सीने पर रखा और रोने लगे। आपने अपने नवासों पर मुहब्बत और मेहरबानी का इज़हार फरमाया और उनके बारे में सबको वसीयत फरमायी।

जनाबे फातिमा ज़हरा (स०) ने हज़रत रिसालतमआब (स०) की तकलीफ़ देखकर कहा: हाए मेरे बाबा की बेचैनी! आपने इरशाद किया
(बक़िया.....पेज 5 पर)

हज़रत इमाम हसन मुजतबा (अ०)

आयतुल्लाह सै० मुहम्मद हुसैन तबातबाई
अनुवादक : काज़िम महदी नगरौरी

हज़रत इमाम हसन मुजतबा (अ०) दूसरे इमाम थे। आप और आपके भाई हज़रत इमामे हुसैन अलैहिस्सलाम अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली (अ०) और पैगम्बरे इस्लाम (स०) की बेटी जनाबे फातिमा ज़हरा (स०) के बेटे थे। पैगम्बरे इस्लाम (स०) ने बार-बार कहा “हसन (अ०) और हुसैन (अ०) मेरे बच्चे हैं।” इस वजह से हज़रत अली (अ०) भी उसी तरह अपने दूसरे बेटों से कहा करते थे, “तुम मेरे बच्चे हो और हसन (अ०) और हुसैन (अ०) पैगम्बरे इस्लाम के बच्चे हैं।”

(मनाकिब इन्ने शहरे आशोब जिल्द-4 पेज-21 व 26)

हज़रत इमामे हसन (अ०) 3 हि० में मदीना मुनव्वरा में पैदा हुए।

(तज़किरतुल ख़वास पेज-193)

और उनकी जिन्दगी के तक़रीबन सात साल पैगम्बरे इस्लाम (स०) की बरकत वाली सोहबत में गुज़रे और वह उनकी निगरानी में पले-बढ़े। पैगम्बरे इस्लाम (स०) की वफ़ात के बाद जो हज़रत फातिमा ज़हरा की वफ़ात से 3 महीने या कुछ तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ छः महीने से ज़्यादा पहले नहीं हुई थी, हज़रत इमामे हसन (अ०) पूरी तरह से हज़रत अली (अ०) की निगरानी में आ गए। अपने बुजुर्ग बाप के इन्तेक़ाल के बाद अल्लाह के हुक्म और अपने बाप की चाहत के मुताबिक़ हज़रत इमाम हसन (अ०) दूसरे इमाम मुक़र्रर हुए। आप तक़रीबन छः महीने ज़ाहिरी ख़लीफ़ा भी रहे जिसके दौरान

आप मुसलमानों के मामलों के निगराँ रहे। इसी बीच मुआविया ने जो कि हज़रत अली (अ०) और उनके ख़ानदान का जानी दुश्मन था और ख़िलाफ़त को हासिल करने के लिए सालों से आमने-सामने था और शुरु में तीसरे ख़लीफ़ा के क़त्ल के बदले का बहाना बनाकर और बाद में खुलेआम ख़िलाफ़त का दावेदार बनकर इमाम हसन (अ०) की ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा करने के लिए अपनी फ़ौजों के साथ इराक़ पर चढ़ाई कर दी जंग चलती रही जिसके दरमियान मुआविया ने काफ़ी रक़म देकर हज़रत इमाम हसन (अ०) के कमाण्डरों और फ़ौजी अफ़सरों को फ़ेर दिया और उन्हें सबज़ बाग़ दिखाए जिसके नतीजे में फ़ौज ने हज़रत इमाम हसन (अ०) के ख़िलाफ़ बगावत कर दी।

(इरशाद पेज-172)

बाद में हज़रत इमाम हसन (अ०) पर जोर डाला गया कि वह सुलह कर लें और इस शर्त पर कि ख़िलाफ़त मुआविया को सौंप दें कि मुआविया के इन्तेक़ाल के बाद ख़िलाफ़त फिर उन्हें वापस कर दी जाएगी। और यह कि हज़रत इमाम हसन (अ०) के ख़ानदान के लोग और उनके मददगारों की हर हाल में हिफ़ाज़त की जाएगी।

(इरशाद पेज-172)

इस तरह से मुआविया ने इस्लामी ख़िलाफ़त पर क़ब्ज़ा जमा लिया और इराक़ में दाख़िल हो गया। एक आम जलसे में उसने सरकारी तौर पर तमाम सुलह की शर्तों को ख़त्म कर दिया।

(इरशाद पेज-173)

और उसकी पैरवी के लिए हर तरह से हज़रत इमाम हसन (अ0) के ख़ानदान के लोगों और उनके साथियों पर दबाव डाला। अपनी इमामत के दस सालों के दौरान आपने अपनी ज़िन्दगी सख़्त परेशानियों और तकलीफ़ों के बीच गुज़ारी जिसमें उनके घर पर भी कोई हिफ़ाज़त का इन्तिज़ाम नहीं था। तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक 50 हि0 में मुआविया की तहरीक पर आपकी एक बीवी के ज़रिए ज़हर देकर आपको शहीद कर दिया गया। (इरशाद पेज-174)

कामिल इन्सान की हैसियत से हज़रत इमाम हसन (अ0) अपने बुजुर्ग बाप और अपने नाना का मुकम्मल नमूना थे। हकीकत में जब तक पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ज़िन्दा रहे, आप और

आपके भाई हमेशा रसूल (स0) की सोहबत में रहे। आप (स0) उन दोनों को कभी-कभी अपने काँधों पर बिठाते थे। सुन्नी और शीआ दोनों उलमा ने हज़रत इमामे हसन (अ0) और हज़रत इमामे हुसैन (अ0) के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की इस हदीस को नक़ल किया है :

“मेरे यह दोनो बेटे इमाम हैं चाहे वह क़याम करें या बैठ जाएँ।” (यानी चाहे वह ज़ाहरी ख़िलाफ़त पर बैठें या न बैठें)

इस हकीकत के बारे में पैग़म्बरे इस्लाम (स0) और हज़रत अली अलैहिस्सलाम की बेशुमार रिवायतें हैं कि अपने बुजुर्ग बाप के बाद हज़रत इमाम हसन (अ0) इमामत की कुर्सी पर जलवाअफ़रोज़ होंगे। □□□

(बक़िया.....वफ़ाते सरवरे दो आलम स0)

बेटी! तुमहारा बाप आज के बाद फिर बेचैन न होगा। अब वफ़ात का वक़्त करीब आ रहा था इतने में लबे मुबारक हिले तो लोगों ने आपको फरमाते हुए सुना: “अस्सलातु वमा मलकत अइमानुकुम” मतलब यह था कि नमाज़ की हमेशा पाबन्दी करना और गुलामों और कनीज़ों के हक़ का ख़याल रखना। चादर कभी अपने मुबारक चेहरे पर डालते थे और कभी हटा देते थे। फिर उंगली से इशारा किया और फरमाया: “बलिररफीकुल अज़्ला” यानी अब सिर्फ़ वह बड़ा और अज़ीम रफीक़ दरकार है। यह कहते-कहते नज़ा की हालत शुरू हो गयी और मुबारक रूह आलमे कुद्स की तरफ़ रवाना हो गयी।

शोहरत इसी की है कि पीर के दिन आँ-हज़रत ने 63 साल की उम्र में वफ़ात पायी और

मंगल का दिन गुज़र कर बुध की रात में दफ़न हुए।

हज़रत अली (अ0) ने बनी हाशिम में से हज़रत अब्बास रज़ि0 और उनके दोनो बेटों के साथ मिलकर गुस्ल दिया और उसामा बिन ज़ैद बिन हारसा और शुक्रान, ‘हुजूर (स0) के आज़ाद किए हुए गुलाम’ भी गुस्ल देने के काम में शरीक थे इन ही लोगों की मदद से हज़रत अली (अ0) ने तदफ़ीन के फ़राएज़ अन्जाम दिए।

अल्लाह उस पाक रूह के सदक़े में मुसलमानों पर रहम फरमाए जिसने तमाम दुनिया को अपने नूरे हिदायत से रौशन और मुनव्वर कर दिया। और तमाम मुसलमानों को इसकी तौफीक़ दे कि वह हुजूर नबी करीम (स0) की पाक सीरत पर अमल करके खुदा की मदद और आपकी पाक रूह की रज़ामन्दी से दुनिया और आख़िरत की कामयाबी और नजात हासिल करें। आमीन!

□□□

हज़रत इमाम जैनुलआबिदीन (अ०)

आयतुल्लाह सै० मुहम्मद हुसैन तबातबाई

अनुवादक : काज़िम महदी नगरौरी

हज़रत इमाम सज्जाद (अली इब्नुल हुसैन, लक़ब जैनुलआबिदीन व सज्जाद अ०) तीसरे इमाम हज़रत हुसैन (अ०) और उनकी बीवी हज़रत शहरबानो के बेटे थे। जो ईरान के हाकिम यज़्दजुर्द की बेटी थीं। आप अपने तमाम भाईयों में हज़रत इमाम हुसैन (अ०) के अकेले बेटे थे जो ज़िन्दा बच रहे थे जबकि आपके बाकी तीन भाई पच्चीस साला हज़रत अली अकबर, पाँच साला हज़रत जाफ़र और दूधपीते हज़रत अली असगर (अ०) कर्बला के वाक़े के दौरान शहीद कर दिए गए थे।

(मक़ातिलुल्लाबिनी पेज-52 व 59)

इस सफ़र में आप भी अपने बुजुर्ग बाप के साथ थे जो तक्दीर के लिखे के तौर पर कर्बला में ख़त्म हुआ लेकिन अपनी सख़्त बीमारी और हथियार उठाने के ताक़त न होने या जंग में न शरीक होने की वजह से आपको जिहाद में हिस्सा लेने और शहीद होने से रोक दिया गया था इसलिए आप हरमे इमाम के काफ़ले के साथ दमिश्क़ रवाना कर दिए गए थे जहाँ कुछ दिनों तक क़ैद व बन्द की तकलीफ़ें उठाने के बाद आपको इज़्ज़त और शान के साथ मदीने भेज दिया गया था। क्योंकि यज़ीद इससे आम लोगों की तरफ़दारी हासिल करना चाहता था। लेकिन उमवी ख़लीफ़ा अब्दुलमलिक के हुक्म से आपको

दोबारा गिरफ़्तार करके मदीने से दमिश्क़ और फिर वहाँ से वापस मदीने ले जाया गया।

(तज़किरतुल ख़वास पेज-324)

मदीने की वापसी पर इमामे चहारुम पूरी तरह से आम ज़िन्दगी से अलग हो गए। अपना दरवाज़ा ना जानने वालों के लिए बन्द कर दिया और अपना सारा वक़्त खुदा की इबादत में गुज़ार दिया। आप से सिर्फ़ अबुहमज़ा और अबुख़ालिद काबुली जैसे शीओं के कुछ ख़ास लोगों ने राब़्ता काएम रखा था और यह हज़रात वह फ़िक्क़ के उलूम शीओं को बताते थे जो इमाम उन्हें समझाते थे। इस तरह शीअियत ख़ूब फैली और पाँचवें इमाम की इमामत के दौरान उसने अपना असर दिखाया। इमाम जैनुलआबिदीन की किताबों में “सहीफ़-ए-सज्जादिया” बहुत ही अहम है जिसमें बड़े ऊँचे इलाही उलूम के बारे में 57 दुआएँ शामिल हैं और यह किताब “जुबूरे आले मुहम्मद (स०)” के नाम से मशहूर है।

कुछ शीओं की रिवायतों के हिसाब से उमवी ख़लीफ़ा हिशाम बिन अब्दुलमलिक की तहरीक पर वलीद बिन अब्दुलमलिक के ज़रिए ज़हर दिए जाने से इमामे चहारुम का इन्तिक़ाल अपनी इमामत के पैंतीस साल बाद 95 हि० (मुताबिक़ 712 ई०) में हुआ।

(मनाकिब इब्ने शहरे आशोब जिल्द-4 पेज-176)

हयाते इमाम मूसा काज़िम (अ०)

हज़रत शहीद सफीपुरी

अनुवादक : लायक रिज़ा नक़वी

नाम व नसब:

इस्मे मुबारक मूसा, कुनियत अबुलहसन व अबुइब्राहीम अबु अली अबुइस्माईल। लेकिन अबुलहसन सबसे मशहूर है। अलकाब काज़िम, साबिर, सालेह व अमीन। मशहूर लक़ब काज़िम है। आपके वालिदे बुजुर्गवार हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ०) थे और माँ हमीदा बरबरिया थीं।

पैदाइश:

7 सफ़र 129 हि० को पैदाइश अबवा में हुई जो मक्के और मदीने के दरमियान एक जगह है।

इमामत:

आप 148 हि० में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ०) की वफ़ात के बाद बीस साल की उम्र में इमामत के दर्जे पर फ़ाएज़ हुए। अपने मुक़द्दस बाप के फैज़े परवरिश और ज़ाती खूबियों ने हज़रत को इल्म के निहायत बुलन्द दर्जे पर पहुँचा दिया था। बीस साल के छोटे से अर्से में आपके इल्मी कमालात की शोहरत हो गयी और इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) ने आपको अपना जानशीन मुक़र्रर कर दिया। मालूम हुआ कि इमामत एक ख़ास इल्म के दर्जे का नाम है जो मीरास से नहीं मिल सकती है।

इमाम के ज़माने के सियासी हालात:

हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ०) मन्सूर दवानेकी की ख़िलाफ़त के आख़री दौर में इमाम हुए। मन्सूर दवानेकी निहायत ज़ालिम बादशाह था उसने बेशुमार सादात को क़त्ल करा दिया

था। और ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिया था। इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) के ख़िलाफ़ उसने साज़िशें कीं यहाँ तक कि धोके से ज़हर देकर शहीद करा दिया। इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) को भी अपने बाद इमामे मूसा काज़िम (अ०) पर मज़ालिम का अन्देशा था। यही वजह थी कि आप ने दुनिया से रुख़सत होने से पहले अपनी जाएदाद के इन्तिज़ाम के लिए पाँच वसी मुक़र्रर फ़रमा दिये थे और उन पाँच आदमियों के खुद मन्सूर का नाम भी था। इसके अलावा मुहम्मद बिन सुलेमान हाकिमे मदीना अपने बड़े भाई अब्दुल्लाह अफ़तह, हज़रत इमाम मूसा काज़िम (अ०) और उनकी मुअज़्ज़मा माँ हमीदा बरबरिया को भी वसी मुक़र्रर किया। इमाम (अ०) ने मन्सूर को वसी मुक़र्रर करके उसकी सियासी कार्यवाइयों में रुकावट डाल दी जब मन्सूर को हज़रत की वफ़ात की ख़बर हुई तो उसने मसलहत समझते हुए तीन बार "इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैइहि राजिऊन" कहा और फिर हाकिमे मदीना को लिखा के उन्होंने पाँच वसी मुक़र्रर किए हैं जिनमें से आप भी हैं वह यह सुनकार ख़ामोश हो गया और कहने लगा कि फिर यह लोग क़त्ल नहीं किए जा सकते। इसके बाद उसने इमाम से कोई ज़बरदस्ती नहीं की। मन्सूर उम्र भर बग़दाद शहर की तामीर में लगा रहा और मुमकिन है कि इस वजह से भी उसे इमाम (अ०) की तरफ़ ध्यान देने की फ़ुरसत न मिली हो बहरहाल इमाम उसके अहद में अमन व सुकून के साथ इमामत के फ़राएज़ अन्जाम देते रहे।

इसके तक्रीबन दस साल बाद 158 हि० में आखिर में जब मन्सूर दवानेकी की वफात हुई तो मेहदी खलीफा हुआ। शुरु में उसने इमाम की कोई मुख़ालेफत नहीं की। मगर 164 हि० में जब वह हिजाज़ हज करने के बहाने से आया तो इमाम मूसा काज़िम (अ०) को मक्का से बग़दाद ले गया और कैद कर दिया। हज़रत वहाँ एक साल तक कैद रहे। लेकिन हज़रत की शख़सियत से मुतास्सिर होकर मदीना वापस भेज दिया।

169 हि० में ख़िलाफ़ते हादी का दौरा आया। उसने हज़रत को कोई तकलीफ़ न पहुँचाई। उसने सिर्फ़ एक साल और एक महीने हुकूमत की।

इसके बाद हारुन रशीद का दौरा आया वह 170 हि० में तख़्त पर बैठा। तख़्त पर बैठने के बाद ही से हारुन रशीद को इमाम मूसा काज़िम (अ०) के क़त्ल की फ़िक्र पैदा हो गयी वह इमाम की मज़हबी हुकूमत को नहीं देख सकता था मगर इतनी दुश्मनी के बावजूद इमाम मूसा काज़िम (अ०) के ख़िलाफ़ कोई इल्ज़ाम न लगा सका। एक तरफ़ इमामे मूसा काज़िम (अ०) की अमन पसन्दी और ख़ामोश ज़िन्दगी, दूसरी तरफ़ सियासी मसाएल की दुश्वारियों ने उसे नौ साल तक इमाम से झगड़ने का मौक़ा न दिया। इब्ने बाबवैह वगैरा ने रिवायत की है कि ख़लीफा हारुन रशीद ने चाहा कि अपनी औलाद को ख़लीफा मुक़र्रर करे। चुनानचे उसने मुहम्मद अमीन जुबैदा के लड़के को वलीअहद बनाया और जाफ़र बिन अशअस को उसका अतालीक़ मुक़र्रर किया। यह्या बिन ख़ालिद बरमकी हारुन रशीद के वज़ीरे आज़म को जाफ़र बिन अशअस से रिक़्ाबत पैदा हो गयी। उसने ख़याल किया कि अगर ख़िलाफ़त मुहम्मद अमीन तक पहुँची तो वज़ारत का ओहदा मुझसे छीन लिया जाएगा उसने सियासी चाल चली कि जाफ़र बिन अशअस पर शीअियत का

इल्ज़ाम लगाया और कहा कि वह मूसा बिन जाफ़र को इमाम मानता है और जो कुछ उसे मिलता है उसका खुम्स हज़रत को भेजता है। हारुन रशीद को जब यह मालूम हुआ तो उसको इमामे मूसा काज़िम (अ०) को तकलीफ़ पहुँचाने की फ़िक्र पैदा हो गयी। एक दिन उसने पूछा आले अबुतालिब में कौन ऐसा है जिसको बुलाकर मूसा बिन जाफ़र का हाल उससे पूछूँ। लोगों ने मुहम्मद बिन इस्माईल का नाम बताया जो हज़रत के भतीजे और इस्माईल की बेटे थे। इस्माईल हज़रत इमाम मूसा काज़िम के बड़े भाई थे और लोगों का ख़याल था कि इमाम जाफ़र सादिक् के बाद वही इमाम होंगे लेकिन लोगों का ख़याल ग़लत निकला। और हज़रत इस्माईल की वफात इमामे जाफ़र के अहद में ही हो गयी और इमाम मूसा काज़िम (अ०) को मन्सबे इमामत अता हुआ। नतीजा यह हुआ कि कुछ लोग इसके बाद भी उनही को इमाम समझते रहे। और इस्माईलिया फ़िरका वजूद में आ गया। मुहम्मद बिन इस्माईल इसी वजह से इमाम मूसा काज़िम (अ०) से इख़्तेलाफ़ रखते थे चूँकि उनके मानने वाले तादाद में कम थे इसलिए वह इमाम से खुल्लमखुल्ला मुख़ालफ़त को मसलेहत के ख़िलाफ़ ख़याल करके जाहरी तौर पर उनकी मुख़ालफ़त नहीं करते थे और उनके यहाँ आना-जाना भी रखते थे। हारुन रशीद ने जब मुहम्मद बिन इस्माईल का नाम सुना तो उन्हें ख़त लिखकर बुलाया उन्होंने दरबारे ख़िलाफ़त में हाज़िर होने के लिए फ़ौरन बग़दाद जाने का इरादा कर लिया। उस वक़्त वह परेशान हाल थे यहाँ तक कि रास्ते के ख़र्च के लिए भी रुपये न थे। मुहम्मद बिन इस्माईल इमाम के पास आए हज़रत ने पूछा कहाँ का इरादा है? कहा बग़दाद का। कहा कि क्यों जाते हो? कहा परेशान हूँ और कर्ज़दार हूँ। मुमकिन है कि वहाँ

जाकर कोई सूरत पैदा हो जाए। हज़रत ने फ़रमाया मैं तुम्हारा कर्ज़ अदा करूँगा और तुम्हारे खर्च का ज़िम्मेदार हूँगा। उन्होंने क़बूल न किया और कहा कि मुझे नसीहत कीजिये। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं नसीहत करता हूँ कि मेरे ख़ून में शरीक न होना और मेरी औलाद को यतीम न करना। फिर कहा कि कुछ और हिदायत कीजिये। हज़रत ने फिर वही फ़रमाया। यहाँ तक कि तीन बार यही वसीयत की। हज़रत ने चलते वक़्त उनको साढ़े चार सौ दीनार और पन्द्रह सौ दिरहम सफ़र के खर्च के लिए दिए। जब वह चले गए तो हज़रत ने फ़रमाया: खुदा की क़सम यह मेरे ख़ून में शरीक होगा और मेरी औलाद को यतीम करेगा। लोगों ने कहा ऐ रसूलुल्लाह के बेटे! आप जानते हैं कि वह ऐसा करेगा और फिर एहसान करते हैं और इतना ज़्यादा माल देते हैं। फ़रमाया कि मेरे बुजुर्गों ने रिवायत की है कि रसूल ख़ुदा ने फ़रमाया कि: “जब कोई शख्स किसी के साथ एहसान करता है और वह उसके जवाब में बुराई करता है और वह शख्स उसके साथ एहसान करने से बाज़ नहीं रहता तो हक़तआला उससे अपने रहम को हटा लेता है और अपने अज़ाब में गिरफ़्तार कर देता है।

जब मुहम्मद बिन इस्माईल बग़दाद पहुँचे तो यह्या बिन ख़ालिद बरमकी उनको घर ले गया और उनको सिखा दिया (अल्लामा मज़्लिसी ने किताब जिलाउल उयून पेज-255 पर इस किस्से को नक़ल किया है) कि जब वह हारून के सामने जाएँ तो अपने चचा की निस्बत कुछ ऐसी बातें बयान कर दें जिससे वह गुस्से में आ जाए और फिर उन्हें हारून के पास ले गया जब वह दाख़िल हुए तो ख़लीफ़ा को सलाम किया और कहा कि मैंने एक वक़्त में एक मुल्क में दो बादशाह नहीं देखे। तू इस शहर में ख़लीफ़ा है

और मूसा बिन जाफ़र मदीने में ख़िलाफ़त कर रहे हैं। मुल्क के चारों तरफ़ से उनके पास टैक्स आता है। उन्होंने बहुत माल व हथियार जमा कर रखा है। हारून ने हुक्म दिया कि उन्हें दस हज़ार दिरहम दिए जाएँ जब वह घर लौटे तो उनके हलक़ में दर्द पैदा हो गया और उसी रात को उनका इन्तेक़ाल हो गया। वह रुपया ख़लीफ़ा ने फिर वापस ले लिया।

उसी ज़माने में अब्दुल्लाह बिन हसन के फ़रज़न्द यह्या के क़त्ल का दर्दनाक वाक़ेआ सामने आया। यह्या से इमामे मूसा काज़िम (अ0) को कोई सरोकार न था बल्कि तारीख़ बताती है कि इमाम ने हुक्मत की मुख़ालफ़त से मना भी किया था। यह्या बिन अब्दुल्लाह की मुख़ालेफ़त को बहाना बनाकर हुक्मत ने बनी फातिमा पर जुल्म शुरू कर दिया और इमाम मूसा काज़िम (अ0) भी इस वाक़ेए के असर से न बच सके।

हारून ने 179 हि0 में अपनी औलाद की ख़िलाफ़त काएम करने के लिए और इमामे मूसा काज़िम (अ0) की गिरफ़्तारी के लिए हज का इरादा किया और चारों तरफ़ फ़रमान भेजे के उलमा व सादात व ओहदेदारान और शरीफ़ लोग सब मक्के में हाज़िर हों ताकि उनसे बैअत ली जाए और अपनी औलाद की विलायत का एलान किया। मक्के बाद वह मदीना आया। दो एक रोज़ ठहरने के बाद इमाम मूसा काज़िम (अ0) को रौज़-ए-रसूल (स0) में नमाज़ की हालत में गिरफ़्तार करा लिया। यह वाक़ेआ 20 शबवाल 179 हि0 का है। हारून ने दो डोलियाँ तैयार करायीं। एक को बसरा और दूसरी को बग़दाद अपने मुहाफ़िज़ दस्तों के साथ रवाना किया ताकि किसी को इमाम के ठहरने की जगह का पता न चल सके और कोई जमात इमाम को क़ैद से छुड़ाने की कोशिश न कर सके। ज़िलहिज्जा को

एक महीना सत्तरह दिन बाद आप बसरा पहुँचे। ईसा बिन जाफ़र हारून का चचाज़ाद भाई बसरा का हाकिम था। एक साल तक उसकी कैद में रहे। इमाम की बुलन्द सीरत और बड़ी शख़्सियत ने ईसा के दिल को मुतास्सिर कर दिया। यहाँ तक कि उसने हारून को लिखा कि इमाम मूसा बिन जाफ़र को कैद करना दुरुस्त नहीं है हारून ईसा से बदगुमान हो गया और इमाम को बग़दाद बुला भेजा। वहाँ इमाम को फज़ल बिन रबी की हिरासत में रखा गया। फिर फज़ल बिन रबी का भी शीअियत की तरफ रुजहान देखकर उसने यह्या बरमकी को मुहाफिज़ मुकरर किया।

शहादत:

सबसे आख़िर में इमाम सनदी इब्ने शाहिक की कैद में रहे। यह निहायत संगदिल और बेरहम इन्सान था। आख़िर इसी की कैद में हज़रत को अंगूर में ज़हर दिया गया। 55 साल की उम्र में 25 रजब 183 हि0 जुमे के दिन शहादत हुई। आपकी लाश के साथ भी हुकूमत ने कोई इज़ज़त वाला तरीका न इख़्तियार किया। कुछ लोगों ने इमाम के जनाज़े को ले लिया और बग़दाद से बाहर दफ़न कर दिया। अब मदफ़ने इमाम काज़िमैन के नाम से मशहूर है।

अख़लाक़ व औसाफ़:

सवानेह हयात इमामों का सबसे अहम हिस्सा, उनके अख़लाक़ व औसाफ़ का बयान है। इन्सानी किरदार की दुरुस्ती हर इमाम की ज़िन्दगी का मक़सद था। इसलिए हम कह सकते हैं कि तारीख़ का यही वह हिस्सा है जिसे इन्सानियत की तारीख़ का जौहर समझा जा सकता है। इमाम मूसा काज़िम के अलकाब उनके औसाफ़े हमीदा की निशानी हैं। यानी काज़िम (गुस्से को पीने वाले) साबिर, अमीन व सालेह। बेशक इल्म

व बर्दाश्त की सिफ़त आप में बहुत ही ज़्यादा थी इसलिए आपका लक़ब काज़िम सबसे ज़्यादा मशहूर हो गया। लेकिन अमीन का लक़ब इस बात का सुबूत है कि आप अहमदे मुस्तफ़ा के हकीकी वारिस थे। और "खुल्के अज़ीम" के आइना थे। और साबिर का लक़ब बताता है कि आपकी रगों में हुसैनी खून दौड़ रहा था। आपके हुस्ने खुल्क की बड़ाई का अन्दाज़ा इस वाक़ेए से होता है कि मदीने का एक हाकिम आपको तकलीफ़ पहुँचाता था और बार-बार हज़रत अमीरुलमोमिनीन अली बिन अबी तालिब (अ0) की शान में गुस्ताख़ी करता था। आपके साथियों ने गुस्सा होकर आपसे बदले की इजाज़त चाही। आपने मना फ़रमाया और उसके पास खुद तशरीफ़ ले गए और ऐसा तरीका इख़्तियार किया कि वह अपनी गुस्ताख़ियों पर शर्मिन्दा हुआ और अपना रवैय्या बदल लिया। इसके बाद हज़रत ने अपने साथियों से पूछा कि वह तरीका अच्छा था जो तुम लोग इख़्तियार करना चाहते थे या यह बेहतर है, जो मैंने इख़्तियार किया। उन लोगों ने मान कर कहा कि वही बेहतर है और हाकिमाना तरीका था जो आपने पसन्द फ़रमाया।

इबादत की ज़्यादती की वजह से लोग आपको "अब्दे सालेह" के लक़ब से याद करते थे। आपको मामूल था कि हर नमाज़े सुब्ह के ताकीबात के बाद सिजदे में पेशानी रख देते थे और ज़वाले आफ़ताब के बाद सर उठाते थे। सखावत और फ़ैय्याज़ी में आपकी शोहरत थी।

किरदार इमाम (अ0) से नौए इन्सानी को दर्से हकीक़त

इस ज़माने के नाखुशगवार माहोल में जब इन्सानी फ़िक़र को खुदकामी और नफ़सानियत ने अपाहिज बना दिया है। जब सियासत ने

इन्सानियत का भेस बदल-बदल कर हकीकत को मशकूक कर दिया है और जब दिमागी इन्तेशार से हकीकत का जज़्बा ठण्डा पड़ चुका है ज़रूरत है इमाम मूसा बिन जाफ़र (अ0) के ऐसे रौशन फ़िक्र इन्सानों के तज़किरे से ज़हनों को रोशनी दी जाए जिन्होंने अपने बुलन्द पाया उसूलों की मदद से बड़ी से बड़ी मुशकिल में भी अज़म व सिबात को हाथ से न जाने दिया। यकीनन उनका इल्म निहायत मुक़द्दस और हकीकी था वरना उनके किरदार में इतनी बुलन्दी नहीं पैदा हो सकती थी जिसका बार-बार मुज़ाहेरा हुआ।

ईसा बिन जाफ़र और फज़ल बिन रबी का इमाम की सीरत से मुतास्सिर हो जाना कोई मामूली बात नहीं है जो शख्स क़ैद में हो उसकी शख़्सियत उस वक़्त तक असरअन्दाज़ नहीं हो सकती जब तक वह इन्तिहाई बुलन्द पाया इन्सान न हो। इसलिए कि मजबूरी की हालत में इल्म व बर्दाश्त व सब्र का मुज़ाहेरा ज़्यादा असर वाला साबित नहीं होता। लोग ख़याल करते हैं कि मजबूरी का दूसरा नाम सब्र है। लेकिन यह वह बुलन्द पाया हस्तियाँ थीं जिनके यहाँ इक़तेदार के साथ ख़ाक़सारी और मजबूरी के साथ वक़ारे नफ़स की शान नज़र आती है। इसलिए हर हालत में उनके नुफ़ूस ग़ैर मामूली तौर पर असर डालते थे।

मुहम्मद बिन इस्माईल के इरादे को जानते हुए भी इमाम ने उनके साथ एहसान किया। इसके माने यह है कि वह जानते थे कि नेकी खुद अपना बदला है। यह उसूल तमाम इन्सानियत और अख़्लाक़ का सरचश्मा है। इस उसूल से बेशुमार नतीजे निकलते हैं जो इतने अहम हैं कि उनके लिए मुस्तक़िल किताबों की ज़रूरत है। (देखें किताब "फ़लसफ़-ए-तमद्दुन लेखक शहीद सफ़ीपुरी। इस किताब में मआशी, मुआशरती, सियासी, अख़लाकी और तमद्दुनी मसाएल का

इल्मी हल पेश किया गया है। और ऐसी मुश्तरका बुनियादें बयान की गयीं हैं जिन पर फ़लसफ़ा व साईंस दोनों की बुनियाद काएम होती है।)

- 1- जब नेकी खुद अपना बदला है तो मालूम हुआ कि नेकी फ़ाएदे वाली है।
 - 2- चूँकि फ़ाएदे वाली चीज़ को इख़्तियार करना अक्लमन्दी है इसलिए नेकी अक्लमन्दी है।
 - 3- क्योंकि इल्म ही अक्लमन्दी है इसलिए नेकी इल्म है। (यही सुक़रात का कहना था कि नेकी इल्म है इसलिए इसकी तालीम दी जा सकती है।)
 - 4- और क्योंकि इल्म कुदरत के क़ानून जानने का नाम है जो अल्लाह का लगाया हुआ है। इसलिए नेकी देने फ़ितरत है यानी नेकी इन्सान की फ़ितरत है।
 - 5- जब इन्सान की फ़ितरत नेकी है और नेकी इल्म है तो मालूम हुआ कि इल्म से नेकी पैदा होती है और जिहालत से बुराई।
 - 6- जब बदी जिहालत से पैदा होती है तो बुरे इन्सानों से नफ़रत ग़ैर हकीमाना काम है। और यही सबब था कि इमाम ने मदीने के हाकिम के साथ नफ़रत भरा बर्ताव करने के बजाए उसके साथ अच्छा सुलूक किया। जिसकी वजह से वह अपने फ़ेल पर शर्मिन्दा हुआ और उसने अपना अन्दाज़ बदल दिया।
- यही नफ़रत इस वक़्त दुनिया में तमाम झगड़ों का सबब बनी हुई है। काश! इन्सान, इन्सान से मुहब्बत करना सीख जाए ताकि झगड़े और लड़ाई की तबाहियाँ ख़त्म हो जाएँ और दुनिया अमन व सुकून की जगह बन जाए। इन्सानी नस्ल का इस वक़्त मासूम इमामों के तरीक़ों से सबक़ लेने की ज़रूरत है। यही वह नज़र आने वाली हकीकत है जिससे फ़ाएदा हासिल करके हकीकत का सबक़ लिया जा सकता है।



“और तक़वे का पहनावा ही अच्छा भला है।”

(सूर-ए-आराफ़)

घर और समाज में खुदा का डर (तक़वा)

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो० हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु० र० आबिद

हाजी सब्ज़वारी और थोड़े पर राज़ी रहने की आदत

1365 हि० (1945-46 ई०) में तबलीग़ के सिलसिले में सब्ज़वारी (ईरान का एक शहर) गया था। वहाँ मैंने महान हकीम (दार्शनिक) हाजी मुल्ला हादी सब्ज़वारी के ख़ानदान के बारे में मालूम किया तो लोगों ने बताया कि उनके एक पोते इस शहर में हैं जो बड़े आलिम, फलसफी और (कुर्आनी) तफ़सीर के बड़े जानकार हैं। और जिस मस्जिद में नमाज़ पढ़ाते हैं उसमें दो बार पूरे कुर्आन मजीद की तफ़सीर बयान कर चुके हैं।

मैं उनसे मिलने गया। उनका अच्छा बर्ताव, मिलने-जुलने का अन्दाज़ और रहन-सहन मरहूम सब्ज़वारी के चलन का पता देने वाले हैं। मेरे मालूम करने पर उन्होंने अपने दादा के हालात बयान किये जो हैरत भरे थे। उन्होंने बताया कि मुल्क के बड़े-बड़े लोग, सियासी और विद्वान सभी उनको मानते और बड़ी इज़्ज़त देते थे, दूर-दूर से लोग उनसे पढ़ने के लिए आते थे फिर भी उनका रहन-सहन और पहनावा सादा था और इस बारे में थोड़े पर राज़ी रहने की उनकी ऊँचे दर्जे की आदत थी। कभी कपड़े बनवा लिये तो सेहत और सफ़ाई का लिहाज़ रखते हुए दसयों साल तक पहनते थे और उसमें जोड़-पेवन्द लगाने को बुरा नहीं समझते थे क्योंकि यह

नबियों की सुन्नत (सदावृत्ति) है।

फूज़ूल खर्ची

फैशन और फूज़ूलखर्ची खुदा के नज़दीक अच्छी बात नहीं है। यह मन की ख़ोहिशों से होती है। अगर आदमी ज़िन्दगी के हर विभाग (Department) में खुदा की तय की हुयी हदों ख़ास कर कम पर राज़ी रहने का लेहाज़ रखे तो क्या हर्ज है। फिर यह आदत मन की बेचैनी व बेकली की दवा भी है और राहत की वजह है। बदन को जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है वह सादी सवारी, पहनावा और खानपान से पूरी हो जाती है। ज़िन्दगी में दिखावे की बराबरी करने से बचना चाहिए, ज़्यादाती के खर्च से बचने और मामूली खर्च करने की आदत डालना चाहिए और फैशनी चीज़ों को पा लेने से दूर रहना चाहिए।

हमें पश्चिम के दिखावे वाले रूप को अपना नमूना (Ideal) न समझना चाहिए। उनसे बहुत बड़ी ग़लती हुई है। उनकी तकनीक और कारीगरी से यह न समझ लेना चाहिए कि जो कुछ लिखा है या जो कुछ कहते हैं वह सही है और उनका दिखावे का रूप असली है। इस्लाम में अहम चीज़ तन और रूह दोनो को सही रखना और इलाक़े, शहर व मोहल्ले को ठीक रखना है। इस्लाम में एक के और सबके मिलेजुले उस ईमान और रूहानी व माददी (भौतिक/Material) बर्ताव व

चलन पर ध्यान दिया गया है जिसमें दुनिया व आखिरत की मसलहत और भलाई है।

थोड़े पर राजी रहने की आदत से हट कर और बीच का रास्ता छोड़कर बेकार और फुजूल के खर्चों में पड़ना और जिन्दगी की दिखावे के रूप में संवारना इस्लाम जैसे इन्सान बनाने वाले स्कूल और पाक-साफ़ इस्लामी तहज़ीब (सभ्यता) में मज़्मत के काबिल (निन्दनीय) है। यहाँ तक कि मुसलमानों की इबादत के घर, मस्जिद के लिए भी फुजूलखर्ची अच्छी नहीं है। मस्जिदों और घरों को रुहानियत से भरपूर और देखने में सादा होना चाहिए ताकि लालच का शिकार न हों और रुह के हक़ से दूर न हो सकें।

सादे कपड़े बनाना चाहिए लेकिन पहनावे के सलीके का लेहाज़ करना चाहिए। खान-पान इतना होना चाहिए जितना ज़रूरी है मगर खाने के सही तरीके को ध्यान में रखना चाहिए। सवारी अपनी शान और हैसियत के हिसाब से होना चाहिए लेकिन उसके चलाने के सलीके (Manners) की अनदेखी न करना चाहिए। जिन्दगी गुज़ारने के लिए, घर बनाइए मगर ऐसा बनाइए जिससे आपकी रुह पर (बुरा) असर न पड़े क्योंकि यह चीज़ें तक्वा, सयंम और सच्चाई पर नज़र रखने से मिलती हैं। वह ईसाइयों और यहूदियों का जीवन है जिसमें घर और उससे जुड़ी चीज़ें सवारी, पहनावा, खान-पान और फैशन आसमान से बातें कर रहे हैं। ईसाइयों के गिरजाघर और यहूदियों के पूजाघर सोने चाँदी से सजे हैं उनमें ऐसी-ऐसी मूर्तियाँ और पुरानी (पुरातत्वी) चीज़ें और फर्नीचर का ऐसा सामान जमा है जिसकी कीमत लाखों करोड़ों डालर है।

यहूदी ईसाई धर्मगुरुओं यहाँ तक कि

पोप के खर्चे हैरत की हद तक बढ़ गये हैं, जिन्हें फुजूलखर्ची ही कहा जा सकता है। अगर पोप की टोपी बेची जाय तो लाखों करोड़ों भूखे इन्सानों का पेट भर जाये। माल की होड़, सूद-ब्याज खाना और डकैती डालना वगैरा खुदा के दुश्मनों का तरीका है। खुदा वालों को उसकी मर्जी के मुताबिक़ अमल (काम) करना चाहिए और बेकार के खर्चे, फुजूलखर्ची से परहेज़ करना चाहिए।

इन बातों को रूप देने वाला और इनकी हिफाज़त करने वाला सिर्फ़ तक्वा है। जो घर और मियाँ-बीवी तक्वे के ज़ेवर से सजे-संवरे हैं वे खुदाई ख़ज़ाने के मालिक हैं। उनकी जिन्दगी खुशियों और पाकीज़गी-सफ़ाई, सुख-चैन, सेहत, सलामती, इन्साफ़, शराफ़त, बड़क्पन और सच्चाई से मालामाल है।

घर और मस्जिद को ऐसा होना चाहिए कि वहाँ पहुँच कर इन्सान सुख चैन महसूस करे और उनके ज़रिये खुदा की ओर ललक बढ़े। बस जिन्दगी की नींव को तक्वे और कम पर राज़ी रहने से और आखिरत पर यकीन के साथ इस तरह बराबर करना चाहिए कि उससे आखिरत संवर जाये और खुदा राज़ी हो जाए।

आज भी तक्वे और थोड़े पर राज़ी रहने से कम आमदनी (आय) में जिन्दगी बितायी जा सकती है। हाँ अगर इसके बावजूद कोई दिक्कत सामने आ जाये और मोमिन अपनी कम आमदनी की वजह से इसका मुक़ाबला न कर सकें तो दूसरे मोमिनों और अल्लाह वालों पर वाजिब है कि वह फ़ौरन मोमिन भाई की मदद करें और उसे इस दिक्कत से छुटकारा दिलाए।



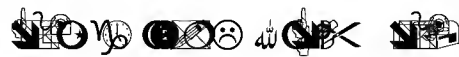












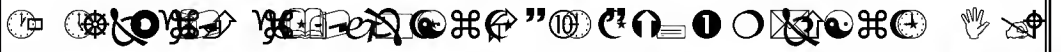















इदारा

मुख्य समाचार

मुसलमानों के सर शर्म से झुक गए हैं**ईरान के खिलाफ़ वोट देने पर मौलाना कल्बे जवाद को सख्त एतराज**

लखनऊ। 5 फरवरी। काएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक्वी साहब ने अपनी रिहाइशगाह वाके जौहरी मोहल्ला चौक में प्रेस कान्फ्रेंस को खिताब करते हुए हिन्दुस्तान के नज़रिए की सख्त मज़म्मत की।

मौलाना ने कहा कि हिन्दुस्तान ने अपने सारे उसलू तोड़ दिये हैं मुल्क के फाएदे तो एक बहाना हैं अगर मुल्क के फाएदे ही देखे जाएँ तो यज़ीद और हिटलर भी सही हो सकते हैं। मौलाना ने कहा कि हिन्दुस्तान की इस शर्मनाक हरकत से मुसलमानों के सर शर्म से झुक गए हैं।

उन्होंने हमेशा मुसलमानों को धोका दिया है। कांग्रेस पार्टी की हिमायत करने वाली पार्टियों को अपनी हिमायत वापस ले लेनी चाहिए। मौलाना ने आयतुल्लाह ख़ामेना-ई मद्दाज़िल्लहू के फत्वे का हवाला देते हुए कहा कि इस्लाम में ऐटम बम बनाना हराम है क्योंकि इस्लाम किसी को नाजाएज़ तौर पर मारने की इजाज़त नहीं देता। उन्होंने इस सिलसिले में दूसरे उलमा को भी शामिल करने की बात कहते हुए कहा कि मुहर्रम के बाद शहर और देहली में भी हुकूमत के खिलाफ़ वह मुहिम शुरू करेंगे।

मौलाना कल्बे जवाद का मुसलमानों के नाम पैग़ाम

लखनऊ। काएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक्वी, इमामे जुमा लखनऊ ने आज नमाज़े जुमा में नमाज़ियों को इस्लामी तालीमात से बाख़बर कराने के साथ मुसलमानों से खिताब करते हुए लोगों को ख़बरदार किया कि दुनिया का सबसे बड़ा दहशतगर्द ज़ार्ज बुश है। उन्होंने कहा कि अमरीका ने ज़्यादातर मुस्लिम मुल्कों पर या तो क़ब्ज़ा कर लिया है या फिर वहाँ अपना आदमी बिठा दिया है। मौलाना ने 19 फरवरी को होने वाले एहतिजाज़ी मुज़ाहरे में ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में पहुँचने की अपील की।

मौलाना ने कहा सिर्फ़ दो मुल्क सीरिया और ईरान ऐसे हैं जहाँ पर अमरीका का कोई दख़ल नहीं है। अमरीका ईरान पर भी क़ब्ज़ा करना चाहता है इसी साज़िश के तहत पैग़म्बरे इस्लाम (स0) का क़ाबिले एतराज़ कार्टून छापा गया ताकि सबका ध्यान उसकी तरफ़ चला जाए और इसकी आड़ में ईरान पर हमला कर दिया जाए।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि शीआ और सुन्नी कैंची के दो फल हैं। इनके दरमियान जो भी आएगा वह कट जाएगा। मौलाना ने कहा कि इस्लाम मुख़ालिफ़ ताक़तें शीआ और सुन्नी को लड़वाने की साज़िश कर रहीं हैं ताकि मुसलमानों की ताक़त बटती रहे।

मौलाना ने कहा कि ईरान के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय एक ऐसी दर्सगाह है जहाँ पर अलग से दीनियात का शोबा है मौलाना ने कहा कि कुछ लोग तरह-तरह की अफवाहें फैला रहे हैं और कुछ इसे सिर्फ़ ईरान के खिलाफ़ एहतेजाज़ बता रहे हैं।

मौलाना ने कहा इससे पहले भी पिछली तहरीकों को नाकाम बनाने की कोशिश की गयी थी जो नाकाम थी और यह भी नाकाम साबित होगी। उन्होंने कहा कि इस मुज़ाहरे की मुख़ालफ़त वही कर रहे हैं जो अमरीका में चुनाव के दौरान गए थे। और ज़ार्ज बुश के लिए वोट माँगे और उसके बदले में रक़म हासिल की थी और वह अब अपने नमक का हक़ अदा कर रहे हैं।

मौलाना ने ज़ार्ज बुश की हिन्दुस्तान आमद की भी सख्त मुख़ालफ़त करने की बात कही। उन्होंने ने कहा कि मुख़ालफ़त का तरीक़ा यह होगा कि जब ज़ार्ज बुश हिन्दुस्तान में हों उस दिन पूरे हिन्दुस्तान में एक वक़्त पर एक ही दिन नार-ए-तकबीर बुलन्द किया जाए और ज़ार्ज बुश मुर्दाबाद, अमरीका मुर्दाबाद के नारे बुलन्द किए जाएँ। मौलाना ने कहा कि वक़्त का एलान जल्द ही कर दिया जाएगा।

इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन के बेमिसाल मुजाहरे में लाखों आशिकाने रसूल (स०) व आले रसूल (अ०) की शिरकत

लखनऊ, 19 फरवरी। नार-ए-तकबीर, अल्लाहुअकबर, नार-ए-रिसालत, या रसूलुल्लाह, नार-ए-हैदरी, या अली, अमरीका मुर्दाबाद, जार्ज बुश मुर्दाबाद के आसमान को फाड़ने वाले नारों के साथ लाखों आशिकाने रसूल ने आज विधानसभा के सामने दुश्मने इस्लाम ताकतों और उनके जरिए की जा रही साजिशों के खिलाफ ज़बरदस्त मुजाहिरा किया।

डेनमार्क समेत कुछ मगरिबी मुल्कों के अखबारों में साजिश के तौर पर छपने वाले अँ-हज़रत स० के कार्टूनों से गुस्सा होकर लखनऊ और आस-पास के लाखों आशिकाने रसूल व आले रसूल ने मुत्तहिद होकर केन्द्र सरकार से मुतालबा किया कि फौरन डेनमार्क के सफ़ीर को वापस भेजा जाए और हिन्दुस्तानी सफ़ीर को डेनमार्क से वापस बुलाया जाए। फ़र्ज़न्दाने तौहीद ने केन्द्र की हुकूमत से यह भी मुतालबा किया कि वह ईरान के सिलसिले में अपने अन्दाज़ पर एक बार फिर ग़ौर करे इसके अलावा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अकलियती किरदार को बहाल करने, मुक़द्दस लोगों के एहतेराम का भी मुतालबा किया गया।

मौलाना कल्बे जवाद, मौलाना हाशमी मियाँ कछौछवी, मौलाना जहाँगीर आलम कासमी, मौलाना शाह फज़्लुररहमान वाएज़ी नदवी और कुछ मुस्लिम जमाअतों की दावत पर लब्बैक कहते हुए मुसलमानों ने 9 बजे सुबह से ही टीले शाह पीर मुहम्मद पर इकट्ठा होना शुरू कर दिया था।

मुजाहरे में मानेखेज़ तक्रीर करते हुए मौलाना सै० हाशमी मियाँ कछौछवी ने कहा कि यज़ीदी हर दौर में पैदा होते हैं। उन्होंने कहा कि यज़ीदी फौज में भी बहुत से कलमा पढ़ने वाले थे लेकिन रसूल स० के नवासे के साथ हक़ का साथ देने और हक़ के रास्ते में कुर्बान होने वाले ही मुसलमान कहलाए। मौलाना की तक्रीर के बाद जोश व जज़्बे से भरा हुआ फ़र्ज़न्दाने तौहीद का यह जनसैलाब विधानसभा की तरफ बढ़ना शुरू हुआ। रास्ते में अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश के हज़ारों पुतलों को आग लगाते हुए मुजाहेरीन विधानसभा के पास पहुँचे तो नार-ए-तकबीर, नार-ए-रिसालत और नार-ए-हैदरी की सदा गूँज उठी। इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन का यह बेमिसाल मन्ज़र शायद ही लखनवी अवाम ने पहली बार देखा होगा। मुजाहरे में तक्रीबन दस लाख से ज़्यादा मुसलमानों को ख़िताब करते हुए मौलाना कल्बे जवाद साहब ने पश्चिमी ताक़तों के अलावा हिन्दुस्तान की केन्द्र सरकार को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा कि वह अमरीका के आगे घुटने टेकना बन्द कर दे। और ईरान के सिलसिले में अपने रवैय्ये पर फिर से ग़ौर करे वरना मुल्क भर में मुजाहेरों का सिलसिला शुरू किया जाएगा। मौलाना ने यहूदी साजिशों और इरादों से मुसलमानों को आगाह करते हुए कहा कि आप इसराइली नक्शे पर निगाह

डालेंगे तो देखेंगे कि इसमें जो इलाक़े दिखाए गए हैं उनमें मक्का मुअज़्ज़मा, मदीना मुनव्वरा, कर्बला और दूसरे मुक़द्दस मक़ामात दिखाए गए हैं और उसका इरादा है कि अमरीका और इस्लाम दुश्मन ताक़तों की मदद से इन इलाक़ों पर कब्ज़ा किया जाए। उन्होंने कहा कि इस्लाम दुश्मन ताक़तों के एजेण्ट शीआ और सुन्नी दोनों फिरकों में मौजूद हैं जो आपस में एक दूसरे को लड़ाकर इस्लाम दुश्मन ताक़तों के मन्सूबों को पूरा करने में लगे हैं आपको उन लोगों से ख़बरदार रहना होगा। मौलाना ने मुसलमानों से अपील की कि वह कोका कोला और पेप्सी का बाइकाट करें और उलमा-ए-किराम से गुज़ारिश की कि वह निकाह और ऐसी महफ़िलों में शामिल न हों जहाँ पर यह पीने की चीज़ें इस्तेमाल हो रही हों। मौलाना ने एलान किया कि बुश की हिन्दुस्तान आमद पर भी मुल्क भर में एहतेजाज़ किया जाएगा और एक ही वक़्त में हर जगह से बुश, अमरीका मुर्दाबाद के नारे बुलन्द किए जाएँगे।

इस मौक़े पर मौलाना जहाँगीर आलम कासमी ने तक्रीर करते हुए कहा कि रसूल की इहानत को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने एक शेर पढ़ा:-

“नई सदी में नए फिर यज़ीद उभरे हैं

हुसैन वालो! हुसैनी दिमाग़ ले के चलो।”

मस्जिद टीला शाह पीर मुहम्मद के इमाम मौलाना फज़्लुररहमान वाएज़ी नदवी ने अपनी तक्रीर में केन्द्र सरकार पर सख़्त निशाना साधते हुए कहा कि डेनमार्क से अपना सफ़ीर वापस बुलाए और मुसलमानों के जज़्बात को देखते हुए ईरान के सिलसिले में अपना रवैय्या बदले।

इस मौक़े पर मौलाना कल्बे जवाद साहब ने आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी का पैग़ाम भी पढ़कर सुनाया जो एक दूसरी तक्रीब में हाज़री की वजह से शिरकत नहीं कर सके थे। इस बड़े इज्तेमा में बड़ी तादाद में बुर्कापोश औरतों ने भी शिरकत की। जुलूस के रास्ते में शहर की तन्ज़ीमों और अन्जुमनों की तरफ से सबीलों का एहतेमाम किया गया था और गाड़ियों पर भी लोग पानी पिलाते चल रहे थे।

इस एहतेजाज़ी मुजाहरे के लिए शीआ सुन्नी दोनों फिरकों से अपील की गयी थी। मुजाहरे में मौलाना कल्बे जवाद, मौलाना हाशमी मियाँ, मौलाना जहाँगीर आलम कासमी, और उनके साथियों की पुरखुलूस कोशिशों पर हक़ पसन्द मुसलमानों ने (सिवाए अमरीका के कुछ ख़रीदे हुए मुल्लाओं और उनके ख़रीदे हुए तलबा के) लाखों की तादाद में मुसलमानों ने शिरकत करके इस्लाम दुश्मन ताक़तों के साथ-साथ उन लोगों को भी हैरत में डाल दिया जो घरों में बैठे हुए बातें बना रहे थे।